

कहानी



महेन्द्र तिवारी

स्टेशन से ब्लू लाइन पकड़ना. अक्सर उसके दोस्त उसके साथ होते, कभी कोई पुरानी याद ताजा होती, तो कभी ऑफिस की गॉसिप. आरुषि अपनी ज़िंदगी के हर पल को लार्जर दैन लाइफ़ अंदाज़ में जी रही थी. लेकिन उसे क्या पता था कि ब्लू लाइन के एक साधारण से सफ़र में उसकी ज़िंदगी का सिमनल बदलने वाला है. उसके साथ उसके जिगरी दोस्तों का काफ़िला था. मिस्ट्री और रॉकी स्कूल के ज़माने के वो दोस्त थे जिन्हें आरुषि के हर सीक्रेट का पता था. प्रीति, जो कॉलेज की याद ताजा रखती थी और जिसका फ़ोन हमेशा 45 डिग्री के एंगल पर सेल्फी मोड में रहता था और अभय, ऑफ़िस का वो साथी जो काम कम और चुटकूले ज़्यादा बांटता था. कोच के अंदर पैर रखने की जगह नहीं थी. मेट्रो के अंदर का नज़ारा किसी युद्ध क्षेत्र से कम नहीं था. लेकिन आरुषि की गैंग ने अपना एक कोना सुरक्षित कर लिया था. रॉकी ने माहौल को गमाते हुए कहा, दोस्तों, मेट्रो में लड़की से बात करने का निंजा टेक्निक बताऊँ? बस पास जाकर धीरे से कहो – एक्सक्यूज़ मी, आपकी स्माइल इतनी ब्राइट है कि मेट्रो की लाइट्स शर्म गई हैं!

पूरी गैंग के ठहाकों से कोच गूँज उठा. पास खड़े एक अकल ने चश्मा ठीक करते हुए उन्हें ऐसे घूरा जैसे उन्होंने मेट्रो की सीट नहीं, बल्कि उनकी ज़मीन हड़प ली हो. प्रीति ने तुरंत

फ़ोन निकाला, गाइज़, पोज़! ये रील तो वायरल होगी. कैप्शन –%मेट्रो मस्ती विद द बेस्टीज़.

आरुषि की ज़िंदगी एक सेट पैटर्न पर चल रही थी. कर्नाट प्लेस में एक मल्टीनेशनल कंपनी में मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव की जॉब थी. सुबह नौ से शाम छह की भागदौड़ और क्लाइट्स के नखरे. उसके मम्मी-पापा जनकपुरी से फ़ोन पर रोज़ एक ही राग अलापते – बेटी, अब 26 की हो गई है, कोई अच्छा लड़का देख ले, शादी की उम्र निकली जा रही है. और आरुषि का एक ही जवाब होता, पापा, पहले करियर की मेट्रो पटरी पर आ जाए, फिर दूल्हा भी देख लेंगे.

आरुषि अपनी धुन में मग्न थी. वह फ़ोन पर अपनी सहेली को बता रही थी कि कैसे उसके बाँस ने उसे संडे की भी ईमेल कर दिया. यार, ये बाँस लोग अपनी बोंबियों से झगड़कर सारा गुस्सा हम पर क्यों निकालते हैं?

तभी मेट्रो राजौरी गार्डन पहुँची. दरवाज़े खुले और भीड़ का एक नया रेला अंदर आया. इसी धक्का-मुक्की में एक लड़का, जो शायद किसी दूसरी दुनिया से आया लग रहा था, आरुषि से जोर से टकराया. लंबा कद, हल्की दाढ़ी, हाथ में लैपटॉप बैग और आँखों में चमक थी. वह लड़का मुस्कराया, ऐसी मुस्कान जो सीधे दिल पर दस्तक दे गया. सॉरी मैम!

आरुषि पलटी. लेकिन गुस्सा वहीं पिघल गया. कोई बात नहीं. लड़का हँस पड़ा. मैं विराज. सॉफ़्टवेयर इंजीनियर. गुरुग्राम में जाँब. आप?

आरुषि, पीछे से रॉकी ने कोहनो मारी, भाई साहब, थोड़ा स्पेस! हमारी आरुषि वीआईपी है, इसका इंश्योरेंस महंगा है! विराज ने हाथ जोड़ लिए, माफ़ करना दोस्त, मैं तो बस सिस्टम चेक कर रहा था. मेट्रो अब राजौरी गार्डन से आगे बढ़ चुकी थी. विराज और आरुषि के बीच बातों का सिलसिला ऐसे शुरू हुआ जैसे दो पुराने बिछड़े हुए रिश्तेदार मिल गए हों. आधे घंटे के सफ़र में दोनों की दुनिया सिमट आई थी.

आरुषि ने उसे अपने स्कूल क वो किस्से सुनाए जब उसने

क्लास बंक की थी, अपने कॉलेज के उन दोस्तों के बारे में बताया जो आज भी उसे ड्रामा क्रीन कहते हैं.

विराज ने कहा, लाइफ़ भी कॉडिंग जैसी है. एक सेमी-कोलन गलत और सब क्रैश. आरुषि हँसी, उसने पलटकर जवाब दिया, और मार्केटिंग? वहाँ तो हम एरर को भी यूनिक फ़ीचर बताकर बेच देते हैं. बाँस कहता है – टारगेट अचीव करो, चाहे दुनिया इधर की उधर हो जाए.

जैसे-जैसे मेट्रो करोल बाग़ पार कर रही थी, आरुषि को महसूस हुआ कि विराज के साथ बिताया गया ये आधा घंटा उसके सालों के दोस्तों के साथ बिताए वक्त से ज़्यादा भारी पड़ रहे थे. विराज उसे टीक नहीं रहा था, बल्कि उसे सुन रहा था. वह उसकी उन बेमतलब की बातों पर भी हँस रहा था जिन पर आरुषि खुद कभी-कभी शर्मिंदा हो जाती थी.

आरुषि महसूस कर रही थी कि उसके पास दोस्त तो बहुत हैं, लेकिन विराज जैसा हमसफ़र कोई नहीं. आरुषि को पता चला कि विराज जितना गंभीर दिखता है, उतना ही गहरा भी है.उधर आरुषि के दोस्तों ने व्हाट्सएप ग्रुप पर हंगामा मचा दिया था. रॉकी – अलर्ट! नया कैरेक्टर एंटर. संभावित दूल्हा! शादी का कार्ड प्रिंट करवाऊं क्या?

मिस्ट्री – आरुषि के चेहरे की लाली देखो, ये सदीं से नहीं, शमाने से है! उस दिन मंगलवार था. अब आर.के.आश्रम मार्ग स्टेशन आने वाला था. आरुषि का दिल किसी ढोल की तरह बज रहा था. उसने सोचा कि अगर आज नहीं कहा, तो शायद ये हमसफ़र अगले स्टेशन पर उतर जाएगा और फिर कभी नहीं मिलेगा. उसने हिम्मत जुटाई और विराज का हाथ हल्के से छुआ. विराज ने उसकी तरफ़ देखा. आरुषि ने सीधे उसकी आँखों में झाँका

और कहा, विराज मुझे लगता है? मैं तुम्हें चाहने लगी हूँ. आई लव यू. विराज चौंक गया, लेकिन उसके चेहरे पर एक सुकून भरी मुस्कान थी. आरुषि रुकी नहीं, उसने आगे बढ़कर ज़िद की, अब चुप मत रहो. मुझे भी वही सुनना है. बोली न, आई लव यू!विराज ने एक गहरी सांस ली, चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान लाई और बोला, अरे आरुषि, ठीक है, कह देंगे. लेकिन कोई उचित अवसर तो आने दो. इतनी जल्दी क्या है? हमारे यहाँ बड़े – बुजुर्ग कहते हैं—सब्र का फल मीठा होता है!

आरुषि, जो भावनाओं के उफ़ान पर थी, इस दार्शनिक जवाब से झुंझला गई. उसने पैर पटकते हुए कहा, अरे कोई मीठा-बीठा नहीं होता! ये सब पुरानी बातें हैं. मुझे अभी सुनना है! पूरा कोच शांत हो गया. विराज उसकी मासूमियत और झुंझलाहट देख जोर-जोर से हँसने लगा. उसको हँसी इतनी असरदार थी कि पास खड़े अंकल, जो अब तक उन्हें घूर रहे थे, वो भी मुस्कुरा दिए. आरुषि उसे घूरती रही, पर अंदर ही अंदर वह भी उसकी हँसी पर फ़िदा हो रही थी.

आरुषि के दोस्त पीछे से हूटिंग करने लगे. रॉकी ने चिंछाया, ये हूई न बात! डायरेक्ट प्रपोज़ल!

मेट्रो राजीव चौक पहुँच चुकी थी. आरुषि को यहाँ उतरना था क्योंकि उसका ऑफ़िस कर्नाट प्लेस में था. दरवाज़े खुले, और लोगों का हजूम बाहर निकलने लगा. आरुषि ने उतरते

वक्त मुड़कर विराज को देखा. वह अब भी मुस्कुरा रहा था.

‘एक पुराना मौसम लौटा’ मानो भावनाओं का सुकून भरा संसार

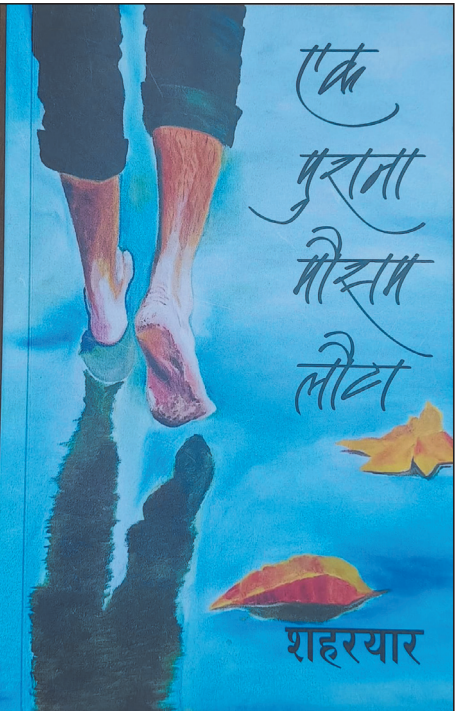


भावेश कानूनगो

संग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि कवि हृदय की सच्ची और सीधी अनुभूतियों का जीवंत दस्तावेज़ है. इसमें कवि ने प्रेम को पूरी मानवीय उदात्तता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है.

इस संग्रह को समझने-परखने से अधिक महसूस किया जाना चाहिए. यदि आपने कभी अपने जीवन में प्रेम का अनुभव किया है तो ये रचनाएँ आपके अंतर्मन के बेहद निकट पहुँच जाती हैं. और इन्हें पढ़ते हुए आप इनसे एक तरह का तादात्म्य बना लेते हैं. धीरे-धीरे ये कविताएँ हमें अपने आसपास की लगने लगती हैं. संग्रह की अधिकांश कविताएँ पाठक को उस मनः स्थिति में ले जाती हैं, जहाँ वह खुद अपने बीते हुए प्रेमानुभवों से जुड़ने लगता है. 'एक पुराना मौसम लौटा' जैसे प्रेम में जीते हुए उसके हर लम्हे को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है. और इसमें कवि सफल हुए हैं. प्रेम के कितने-कितने शेड्स इसमें आते-जाते महसूस जाते हैं. प्रेम

पुस्तक चर्चा



का कोई एक सरल रेखीय कोण नहीं होता, वह तो हर बार अपना एक नया कोण लेकर हमें छकाता है. इस संग्रह की तमाम कविताएँ इस बात की तस्दीक कराती हैं. कवि ने प्रेम के विभिन्न पड़ावों- 'स्पर्श की भाषा', 'प्रथम संवाद', 'विरह', और उसकी गहराई का मार्मिक और प्रभावी चित्रण किया है.

कवि का पहला संग्रह होने के बाद भी इसकी भाषा हमें चौंकाती है. इसमें उर्दू और शुद्ध हिंदी के शब्दों का सुंदर और संतुलित समन्वय है. यही भाषिक संगम हमारी साझा संस्कृति का सशक्त प्रतिबिंब बनकर उभरता है. कविताओं की भाषा सरल, सहज और सीधे हृदय को स्पर्श करने वाली है, जो पाठक को बिना किसी जटिलता के भावों की गहराई तक ले जाती है. कवि की इस आमफहम भाषा का जादू कविता के साथ भीतर उतरता है और देर तक वहीं घुला रह जाता है. कविता पाठक के अन्तस् में लम्बे समय तक ठहरी रह जाती है और यह कविता की विशेषता कही जा सकती है.

'अनजाने जंगल की खुशबू' शीर्षक कविता में कवि लिखते हैं- 'तुम आती हो सामने और ठहर जाता है समय...' इन पंक्तियों में प्रेमी के सामने प्रिय के आगमन पर समय के ठहर जाने के उस जादुई क्षण को कितने प्रभावशाली ढंग से उकेरा गया है. यहाँ खुशबू, साँसों के उताल-चढ़ाव और उसके सौंदर्य का चित्रण कविता पढ़ने वाले के मन में सजीव दृश्य उपस्थित कर देता है. इसी तरह 'एक धीमी-सी धुन' कविता में यह संदेश है कि किसी वस्तु का वास्तविक मूल्य उसकी बाज़ार-कीमत से नहीं, बल्कि उससे जुड़ी भावनाओं और स्मृतियों से तय होता है. 'तुम्हारे सुख की खातिर' कविता की यह पंक्ति पूरी रचना का सार प्रस्तुत करती है- 'मेरा प्रेम दूर होकर भी, तुम्हारे पास ही रहा.' स्पष्ट है कि प्रेम शारीरिक उपस्थिति का मोहताज नहीं, बल्कि भावनात्मक समर्पण और पवित्रता का प्रतीक है. कवि ने 'खामोशी' को गवाह बनाकर यह भी दर्शाया है कि कई बार जो बात शब्द नहीं कह पाते, वह मौन सहज ही अभिव्यक्त कर देता है.

शीर्षक कविता 'एक पुराना मौसम लौटा' जैसी कविताएँ इस संग्रह को एक सुकूनभरी अनुभूति

प्रदान करती हैं. वे जीवन की आपाधापी के बीच प्रेम को छोटी-छोटी स्मृतियों में छिपी खुशियों को खोजने की प्रेरणा देती हैं. यहाँ नॉस्टेल्लिजिया और रोमानियत का सुंदर संगम दिखाई देता है, जो इस कृति को प्रेम रचनाओं के लिहाज से खास बनाता है. संग्रह में प्रेम की अवधारणा कई स्थानों पर दार्शनिक रूप भी धारण करती है- 'प्रेम ही है आरंभ, प्रेम ही है अंत' यह पंक्ति सूफी और भक्ति परंपरा की उस धारा की याद दिलाती है, जहाँ प्रेम को ही सृष्टि का मूल तत्व माना गया है. 'जग और परलोक' का एक ही जाना इस बात का संकेत है कि प्रेमी के लिए उसका प्रेम ही उसकी संपूर्ण दुनिया बन जाता है. यह दृष्टि कविता को व्यापक और आध्यात्मिक आयाम प्रदान करती है. शिवना प्रकाशन ने इसे बड़े संजीदा ढंग से प्रकाशित किया है. फॉण्ट, कागज़, प्रिंटिंग हर लिहाज से यह पठनीय बन पड़ा है. इसका आवरण ही इतना सुंदर है कि देखते ही हाथ में लेने को मन करता है.

यह कवि का प्रथम संग्रह है, और इस दृष्टि से यह उम्मीदें जगाता संभावनाशील आरंभ कहा जा सकता है. मालवी कहावत है 'पूत का पाँव, पालना में ही दिख जाना' -जो यहाँ सार्थक प्रतीत होती है. 'एक पुराना मौसम लौटा' संकेत है कि आने वाले समय में शहरयार की रचनाएँ और अधिक परिपक्व, सरोकारी और हृदयस्पर्शी रूप में सामने आएँगी.

‘एक पुराना मौसम लौटा’ (कविता संग्रह)
शहरयार
मूल्य: 150 रुपये
प्रथम संस्करण, 2026
प्रकाशक : शिवना पेपर बैक्स, सीहोर, मप्र

लघुकथा

बेजान खम्भा



बसंत राघव

राही थी. मास्टर साहब की चुप्पी उनकी सहिष्णुता थी या सरकारी नौकरी छिन जाने का डर, यह उनके चेहरे पर छलक उठे पसीने से झलक रहा था.

तभी शिक्षा मंत्री का काफिला धूल उड़ता हुआ वहाँ रुका. मास्टर साहब की आँखों में उम्मीद की एक किरण जगी, पर वह क्षण भर में ही बूझ गई. मंत्री जी ने गाड़ी से उतरते ही अपने समर्थकों की ओर देखा, जिनके हाथ में पार्टी के प्रचार की तख्तियाँ थीं.

मंत्री जी ने मास्टर के कंधे पर हाथ रखा और अत्यंत मधुर स्वर में बोले, 'देखिए मास्टर साहब, आप विद्वान हैं. थोड़ा सामंजस्य बिठाना सीखिए. संस्कारों की बातें अपनी जगह हैं, पर व्यवहारिकता भी कोई चीज होती है.'

मंत्री की चमचमाती गाड़ी धूल उड़ती निकल गई. धूल का वह गुबार जब प्रतिनिधि की मूँछों पर पड़ा, तो वे गर्व से और तन गई; लेकिन मास्टर साहब की आँखों में वह रेत की तरह चुभने लगा. उनका सिर झुक गया था. अहंकार की जीत और ज्ञान की हार के बीच, वे भीड़ में एक बेजान खम्भे की तरह चुपचाप खड़े रह गए.



संपादकीय बोर्ड **प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी**

दहेज... आखिर कब तक?



सुचिता सकुनिका

इस व्यवस्था को मजबूत करते हैं. जब कोई घटना होती है, तब अक्सर लोग कहते हैं — ‘बहुत लालची लोग थे...’ ‘हमने तो एक करोड़ दिए थे...’ ‘आलीशान शादी की थी...’ ‘स्कोर्पियो दी थी...’ पर मेरा सवाल है — क्यों दी? क्या लड़का कमाता नहीं था? क्या वह अपने दम पर गाड़ी नहीं खरीद सकता था? और अगर लड़की खुद पढ़ी-लिखी, आत्मनिर्भर और कमाने वाली है, तो फिर दहेज के नाम पर इतना दिखावा क्यों?

समस्या सिर्फ दहेज की रकम नहीं, उस सोच की है जहाँ रिश्तों की कोमत सामान से तय की जाती है और लड़कियों से भी एक सवाल... जो रिश्ता शुरूआत से ही लेन-देन पर टिका हो, क्या वह सच में बराबरी और सम्मान का रिश्ता कहलाने योग्य है? दहेज के सहारे बने दिखावे से बेहतर है आत्मसम्मान के साथ सादा जीवन जाना.

सबसे दुखद बात यह है कि आज भी कई मामलों में महिलाओं के ही बयान सुनने को मिलते हैं — ‘वो पौधों में पानी नहीं देती थी...’ ‘पूजा नहीं करती थी...’ ‘घर के काम ठीक से नहीं आते थे...’ जब एक महिला ही दूसरी महिला को अपनाने के बजाय उसे कसौटी पर तौलने लगे, तो समझ जाइए कि समाज सिर्फ आधुनिकता का दिखावा कर रहा है. अंदर से वह अब भी सदियों पुरानी सोच में जकड़ा हुआ है. रिश्ते प्यार, सम्मान और अपनापन माँगते हैं, लेन-देन



नहीं. और उन माता-पिता से हाथ जोड़कर विनम्र प्रार्थना है — अगर दहेज में स्कोर्पियो देने की क्षमता रखते हैं, तो बेटी के नाम एक छोटा-सा घर दे दीजिए. कम से कम उसके पास एक ऐसी जगह हो होगी जहाँ वह बिना किसी सवाल, बिना किसी ताने के वापस लौट सके.

मैंने पहले भी लिखा था — क्या शादी के बाद मायके के दरवाजे बेटीयों के लिए बंद हो जाते हैं? क्यों इतनी लड़कियाँ वापस घर लौटने के बजाय खुद को खत्म करना चुन लेती हैं? क्योंकि शायद उन्हें यह भरोसा ही नहीं दिया जाता कि ‘बेटी, यह घर आज भी तेरा है. जहाँ तक संभव हो रिश्ते निभाना, पर किसी अत्याचार को सहना मत.’ बेटीयों को सिर्फ विदा मत कीजिए.

उन्हें इतना भरोसा भी दीजिए कि अगर दुनिया ठुकरा दे, तो उनका अपना घर अब भी उनकी इंतज़ार कर रहा है.

क्लास by बड़े भाई

ओवरथिंकिंग हो तो यह करके देखें



संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, एक रात मैं बैठा था, अचानक से एक विचार, न जाने कहीं से आकर मेरी हालत खराब कर दी.. वह विचार था कि मैंने अच्छी खासी नौकरी छोड़कर लेखक बनने का काम चुना.. आगे चलकर लोग कविता कहानी नहीं सुने तो क्या होगा...? लोगों को बाद में नही पसंद आया तो क्या होगा...? मेरा पूरा जीवन बरबाद हो जाएगा.. मेरा खर्च कैसे चलेगा.. मेरा परिवार कैसे चलेगा.. कैसे जीवन बीतेगा...? और इसका एक पूरा चलचित्र मेरे दिमाग ने बनाना शुरू कर दिया.. मुझे सब दूर दूर तक दिख रहा था.. और उस दूर दूर तक मेरी नाकामी, मेरी असफलता, यही सब दिख रहा था यानी सब कुछ मात्र नकारात्मक..

इसने मेरे भीतर एक डर भर दिया और मैं इससे बचने और निबटने के उपाय ढूँढने लगा.. हालत ऐसी हो गयी कि मेरी भूख लन बंद हो गयी... किसी से बात करने का मन नही कर रहा था.. अपना आत्मविश्वास धराशायी हो चुका था.. मैं ओवरथीनक कर रहा था.. आप भी इसी से जूझ रहे हैं.. आपका भी दिमाग नेगेटिव विचारों का अड्डा बन चुका है तो आज इसी से निबटने पर चर्चा करते हैं..

छोटे भाई, इससे पार पाने के लिए यह तीन बातें समझ लीजिए.. मेरा निजी अनुभव रहा है, निश्चित तौर पर आपको भी मदद मिलेगी.

पहला – आपके पास टारगेट्स नही है, ड्रीम्स हैं.. जब सपनों को कितने समय में और कैसे पूरा करेंगे तो वह टारगेट कहलाता है...जब वो नही होता है तो दिमाग बेवैनी पैदा करता है और फिर उससे बचने के उपाय खोजता है तो आपको एक टारगेट बनाना है

दूसरा – जो आप सोच रहे हैं उसके होने के चांस न के बराबर हैं, आपका अपना सबकुछ खत्म होता सा दिख रहा है यह सब पूरी तरह झूठ है, वास्तव में ऐसा कुछ नही है..

तीसरा – सुबह शाम दो चार दोस्त बनाइए उनके साथ बैठिये गपशप करिए.. सूम कर आइये.. थोड़े दिन में सब ठीक हो जाएगा.

मैंने यही किया किया था और बिल्कुल ठीक हो गया था.. मूझपर नहरोस करके कुछ दिन यह करके देखिए.. आप भी बिल्कुल ठीक हो जाएंगे.. आपके भीतर की ऊर्जा जो कहीं अनियंत्रित विचारों की गिरफ्त में है, बाहर आ जाएगी.

और एक बात आपको बताऊँ जब मुझे ऐसा हुआ था तब मुझे एक गीत याद आ गया था..जो मैंने उस समय सुना था, शायद आपके भी काम आए..

होनी और अनहोनी की परवाह किसे है मेरी जान
हद से ज्यादा यही होगा, हम यहीं मर जायेंगे.

कविता

जेठ का महीना



डॉ. प्रज्ञा मिश्रा

पीपर की छँयौं कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
रोटी कलेवा में नेनू सुहाए।
अँभियाँ की चटनी पुदीना बनाए।
मटका भर पानी तुरत रीत जाए।
गोरू तलैयन में डुबकी लगाए।

पीपर की छँयौं कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
खेतन में खजरी पेड़ खाँ सजाए।
आम गिरे मूडन पे बड़ो मन भाए।
दार-भात अथार्यों रुच- रुच खाए।
बिजौरे कचरियाँ स्वाद है बढाए।

पीपर की छँयौं कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।
सतुआ औ बिचचुन घोर के खबाए।
आम रस रोटी सबै खाँ सुहाए।
भरतो गकड़ियन को स्वाद न भुलाए।
ठंडई, जलजोरा पनो तो पिबाए।

पीपर की छँयौं कितनी सुहाए।
आँगन और बखरी साँझ में पुसाए।

